ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 92 अंक : 19
आषाढ़ कृष्ण सप्तमी
विक्रम संवत् 2075
कलि संवत् 5119
05 जुलाई 2018 से 21 जुलाई 2018
दयानन्दाब्द : 194
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,119
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
डॉ. बलवंत शास्त्री, बहरोड़, अलवर
डॉ. स्नेहलता शर्मा, राज. सस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
डॉ. संदीपन आर्य, जयपुर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा सम्पादक, आर्य्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018। मो. – 9314032161
मुद्रक : राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

आर्य महासम्मेलन की तैयारियों से सम्बन्धित सब आर्य समाजों/आर्य संस्थाओं की सेवा में पत्र

माननीय महोदय,

सादर नमस्ते !

प्रभु कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आप सभी को अवगत है कि "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा" के संयुक्त तत्वावधान में "अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2018 दिल्ली" का आयोजन दिल्ली में दिनांक 25–26–27 एवं 28 अक्तूबर, 2018 तक किया जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की परम्परा का आरम्भ वर्ष 1927 में दिल्ली से हुआ था। तब से आर्यों के विशाल संगठन के ये आयोजन देश–विदेश में होते रहे। वर्ष 2006 के दिल्ली महासम्मेलन में लिए गए संकल्प के आलोक में इन महासम्मेलनों की शृंखला विदेशों में पुनः आरम्भ हुई और तब से लेकर अब तक अमेरिका, मॉरीशस, सूरीनाम, हॉलैण्ड, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर–थाईलैंड, ऑस्ट्रेलिया, नेपाल एवं बर्मा में आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए हैं। अब यह महासम्मेलन पुनः दिल्ली में आयोजित हो रहा है। देश–विदेश में इसकी तैयारियां आरम्भ हो चुकी हैं। इस सम्बन्ध में आपसे निवेदन है कि–

प्रान्तीय सभा के कार्यालय को ही सम्मेलन का प्रान्तीय कार्यालय बनाया गया है।

अपनी आर्यसमाज के समस्त अधिकारियों, सदस्यों सहित अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने के लिए आर्यजनों को प्रेरित करें। आपकी आर्यसमाज की ओर से कितने आर्यजन पहुंचेंगे इसकी सूचना यथाशीघ्र केन्द्रीय कार्यालय को भेजें तथा उसकी प्रति प्रान्तीय सभा को भी भेजें।

अपनी आर्य समाज के बाहर तथा मुख्य मार्ग और चौराहों पर सम्मेलन के होर्डिंग बनवाकर लगवाएं तथा सम्मेलन के पत्रकों में अपनी आर्यसमाज के अधिकारियों के नाम प्रकाशित करके जन–सामान्य को अधिकाधिक संख्या में आमन्त्रित करें। सीडी प्रान्तीय कार्यालय अथवा केन्द्रीय कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

अपनी आर्यसमाज/संस्था की ओर से तीन–चार दिन की अथवा साप्ताहिक रूप से प्रभातफेरी का आयोजन करें तथा अधिकाधिक युवा शक्ति को महासम्मेलन सम्मिलित करने का प्रयास करें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन तक आपकी संस्था की ओर से आयोजित होने वाले प्रत्येक उत्सव आदि के पत्रकों में महासम्मेलन की जानकारी अवश्य दें तथा सम्मेलन का "Logo" भी अवश्य छापें। लोगो www.arya mahasammelan.org से डाउनलोड किया जा सकता है।

सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में विज्ञापन रूप में अपनी

योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

आर्यसमाज/संस्था की गतिविधियों का विवरण प्रकाशित कराएं, जिससे आर्यसमाज के इतिहास में आपकी का संस्था नाम अंकित हो। स्मारिका में विज्ञापन की सूची इस पत्र के साथ भेजी जा रही है।

आपकी आर्यसमाज/आपके क्षेत्र में 80 वर्ष से अधिक आयु के यदि कोई आर्य महानुभाव हों, जिन्होंने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार तथा विशेष कार्य को समर्पित किया हो तो उनका पूर्ण विवरण लिखकर केन्द्रीय आयोजन समिति को भेजे, जिससे उनके नाम को सम्मान समिति के विचारार्थ भेजा जा सके।

उपरोक्त के अतिरिक्त सम्मेलन को सफल, यादगार एवं और भी अधिक उपयोगी बनाने के लिए आापके पास यदि कोई सुझाव हो तो उसे लिखकर केन्द्रीय आयोजन समिति को भेजें, जिससे आपके सुझावों/विचारों पर चर्चा की जा सके।

सम्मेलन आयोजन समिति की ओर से दान एकत्र करने के लिए कूपन प्रकाशित किए गए हैं। राशि एकत्र करने हेतु आप प्रान्तीय कार्यालय से अथवा केन्द्रीय कार्यालय से कूपन मंगवाने तथा यथाशीघ्र एकत्र दानराशि भिजवाने की कृपा करें तथा अपनी आर्यसमाज की ओर से भी अधिकाधिक सहयोग राशि प्रदान करें। कृपया सहयोग राशि का चैक 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – महासम्मेलन – 2018' के नाम बनवाकर सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस महासम्मेलन में आपका एवं आपकी आर्यसमाज/संस्था का सहयोग पहले से अधिक प्राप्त होगा और सम्मेलन को सफल बनाने में हम अपने प्रान्त की ओर से अधिकाधिक सहयोग कर सकेंगे।धन्यवाद सहित

भवदीय

डॉ. सुधीर कुमार शर्मा (मन्त्री)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

भरतपुर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा भरतपुर के तत्वावधान में 22वां वार्षिक आर्य महासम्मेलन एवं विश्व शांति यज्ञ गायत्री रिसोर्ट सारस चौराहा पर मनाया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सत्यप्रिय मथुरा द्वारा ने वेदों की ऋचाओं द्वारा यज्ञ कराया। इसमें डॉ. वन्दना मथुरा, स्वामी स्वदेश जी अधिष्ठाता गिरजानन्द गुरूकुल मथुरा एवं अध्यक्ष प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा मथुरा स्वर सम्राट श्री नरदेव वैनीवाल हरियाणा एवं अन्य विद्वानों ने भाग लिया। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री सत्यदेव आर्य ने बतलाया कि कार्यक्रम में राजस्थान व जिले की आर्य सभाओं के साथ साथ उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा के आर्य बन्धुओं ने भाग लिया।

सत्यदेव आर्य

शोक संदेश

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कोषाध्यक्ष श्री डॉ. संदीपन आर्य की माता जी श्रीमती सुमित्रा देवी आर्या का आकस्मिक देहावसान दिनांक 21/06/2018 को शाम 4 बजे हो गया उनकी वैदिक रीति से अन्तेष्टि आर्य समाज नीदड़, जयपुर में दिनांक 22/06/2018 को प्रातः की गई। वे आर्य समाज नीदड़ के प्रधान एवं वैदिक पुरोहित पं. भगवान सहाय विद्यावाचस्पति की धर्मपत्नि थीं। आपनें अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज नीदड़ के निर्माण एवं वैदिक धर्म प्रचार प्रसार कार्यों में पति के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर लगा दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के समस्त सदस्य दुःख के इस समय में परिवार के साथ शोक संवेदना प्रकट करते हैं। तथा परमपिता परमात्मा से उनके आत्मिक शान्ति की प्रार्थना करते हैं।

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमोः । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

सभा अधिकारियों द्वारा आर्य समाजों का निरीक्षण एवं प्रचार कार्य

- **आर्य समाज पवनपुरी बीकानेर** – दिनांक 17/4/18 को सभा अधिकारियों ने बीकानेर स्थित पवनपुरी आर्य समाज का निरीक्षण किया सभा द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी श्री अंकुश आर्य द्वारा इस आर्य समाज की निर्वाचन प्रक्रिया पूर्ण करवाई गई। इस कार्य में श्री देवेन्द्र शास्त्री अन्तरंग सदस्य, श्री सुखलाल आर्य, आय व्यय निरीक्षक, अमित आर्य पूर्व उपप्रधान, श्री डॉ. उमेश आर्य सदस्य आर्य समाज लाडनूँ आदि सभा अधिकारी शामिल रहे। श्री सुखलाल आर्य ने आय – व्यय का सम्पूर्ण निरीक्षण किया ज्ञात रहे विगत कुछ वर्षो से इस समाज का सभा के प्रति उत्तरदायित्व शून्य था। स्थानीय पदाधिकारी एवं सभा के अधिकारियों द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया कि आगे आर्य समाज पवनपुरी सभा के प्रति अपने सम्पूर्ण उत्तर दायित्वों का निर्वहन पूरी तन्मयता एवं नियमानुसार करेगा वहाँ के प्रधान श्री राधाचरण शर्मा एवं मंत्री श्री गौतम सिंह जी ने वैदिक धर्म प्रचार – प्रसार के लिए मिलकर कार्य करने का संकल्प लिया। सभा के निरीक्षक श्री सुखलाल आर्य द्वारा आय–व्यय का निरीक्षण कर दशांश, निश्चित् कोटि एवं आर्य मार्तण्ड शुल्क निर्धारित किया गया। जिसमें सभा को एक लाख छप्पन हजार आठ सौ साठ (1,56,860) दशांश के रूप में तथा एक लाख पाँच हजार प्रचार वाहन के लिए तथा ग्यारह हजार रुपये बीकानेर संभाग में आर्यवीर दल की गतिविधियों के संचालन हेतु आर्य समाज पवनपुरी के पदाधिकारियों ने सभा को सहर्ष प्रदान किए। इसके लिए मंत्री श्री गौतम सिंह जी ने कहा कि हम आगे भी पवनपुरी आर्य समाज का दशांश नियमानुसार सभा को देते रहेंगे। जिससे वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार कार्यों को गति मिलती रहे। आर्य समाज पवनपुरी बीकानेर द्वारा इस प्रकार नियम का पालन करना एवं संकल्प लेना प्रान्त के प्रत्येक आर्य समाज के लिए आदर्श उदाहरण एवं प्रेरणा है। यदि प्रत्येक आर्य समाज इस प्रकार संकल्प लेकर सहयोग प्रदान करें तो राजस्थान प्रान्त में आर्य समाज के संगठन को मजबूती प्रदान की जा सकती है। आर्य समाज पवनपुरी का यह सहयोग संगठन एवं प्रचार–प्रसार के कार्यों में मील का पत्थर साबित होगा।
- **आर्य समाज जेल रोड (महर्षि दयानन्द मार्ग) बीकानेर**
  दिनांक 18/04/18 को 11 बजे सभा के उपर्युक्त अधिकारी आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर पहुँचे जहाँ प्रधान श्री महेश जी सोनी एवं कार्यकारिणी के अन्य सदस्य उपस्थित मिले, यहाँ का परिसर दो भागों में विभक्त है। एक भाग में पुनर्निर्माण प्रस्तावित है जो कुछ अवरोधों के कारण अटका हुआ है, दूसरे भाग में एक हिस्से में स्टेट बैंक संचालित है जिसका किराया आर्य समाज को प्राप्त होता है। प्रचार–प्रसार की न्यून गतिविधियाँ देखकर सभा अधिकारियों ने प्रेरित किया। श्री सुखलाल जी ने आय–व्यय का निरीक्षण किया किन्ही कारणों से प्रधान श्री महेश सोनी जी सम्पूर्ण आय व्यय का निरीक्षण करवाने में असमर्थ रहे। भविष्य में इस आर्य समाज का आय व्यय निरीक्षण करके उचित व्यवस्था सभा द्वारा की जायेगी।
- **आर्य समाज सुजानगढ़ चुरू**
  दिनांक 18/4/18 को सांय सभा के अधिकारियों ने आर्य समाज सुजानगढ़ चुरू का निरीक्षण किया आर्य समाज के मन्त्री श्री रविन्द्र आर्य एवं अन्य सदस्यों के साथ आर्य समाज की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की तथा समाज के निर्वाचन जो विगत कुछ वर्षों से अवलम्बित हैं, करवाने पर चर्चा हुई, आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के कार्यो पर विचार हुआ।
  रविन्द्र जी द्वारा समाज से सम्बन्धित कुछ समस्याएँ रखी गई जिन्हें दूर करने के लिए सभा के सदस्य श्री सुखलाल जी ने आवश्यक सुझाव दिए।
  अन्त में सभा अधिकारियों ने आर्य समाज लाडनूँ एवं आर्य समाज दुजार होते हुए सायं काल जयपुर के लिए प्रस्थान किया।

सुखलाल आर्य
(आय व्यय निरीक्षक)
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

जिज्ञासा एवं समाधान

जिज्ञासा 1– सत्यार्थ प्रकाश में ओ३म् शब्द अ, उ, म् के निम्न प्रकार अर्थ बतायें है–

अ – विराट, अग्नि, विश्व। उ– हिरण्यगर्भ, वायु, तेज। म् – ईश्वर, आदित्य और प्रज्ञा।

स्व. श्री रामसिंह जी भजनोपदेशक ने अपनी पुस्तक ओ३म् की व्याख्या (प्रकाशक विजय कुमार हासानन्द) में अकार से ब्रह्म, उकार से जीव और मकार से प्रकृति भी ग्रहण करने के लिए लिखा है तथा आगे काफी विस्तृत व्याख्या लिखी। मेरे द्वारा इस प्रकार बताने पर विद्वान् शास्त्री जी ने प्यार से कहा कि यह गलत है।

कृपया मेरी इस भ्रान्ति प्रमाण सहित दूर करने का कष्ट करें कि क्या अकार, उकार व मकार से ब्रह्म, जीव व प्रकृति ग्रहण किये जा सकते हैं या नहीं? शास्त्री जी भी वृन्दावन गुरूकुल से स्नातक व विद्वान् हैं।

सी. के सक्सेना, सुभाष कॉलोनी, गुना, म.प्र.

समाधान – सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि ने ओम् का अर्थ करते हुए अ, उ, म् इन तीनों अक्षरों के अलग – अलग अर्थ किये हैं। ये अर्थ महर्षि ने शास्त्र के अनुसार ही किये हैं। माण्डूक्योपनिषद् में इसकी चर्चा मिलती है। विश्वादि के लिए जागरितस्थानो वैश्वानरो कारः प्रथमा मात्रा। (माण्डू–9) ओम् की प्रथम मात्रा अकार है, उसका सम्बन्ध जागरित स्थान से है और वह वैश्वानर –विश्व – सम्बन्ध है। तैजसादि स्वप्नस्थानस्तैजस उकारो द्वितीय मात्रा (माण्डू–10) ओम् की द्वितीय मात्रा का उकार है, उसका सम्बन्ध स्वप्न स्थान से है और तैजस है। प्राज्ञादि सुषुप्तस्थानः प्राज्ञो मकारस्तृतीय मात्रा। (माण्डू–11) ओम् की तृतीय मात्रा मकार है। उसका सम्बन्ध सुषुप्त स्थान से है और वह प्राज्ञ है। यहाँ इतना सारा लिखने का तात्पर्य यह है कि ओम् का जो अर्थ – अकार से विराट्, अग्नि, विश्वादि। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु, तैजसादि। मकार से ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञादि किया है, वह शास्त्र सम्मत है।

आपने पूछा कि अकार से ब्रह्म, उकार से आत्मा और मकार से प्रकृति ऐसा अर्थ किया जा सकता है या नहीं? उत्तर – नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसमें कोई इस प्रकार का शास्त्रीय प्रमाण नहीं है। कहीं कोश में भी ऐसा अर्थ देखने को नहीं मिलता। हाँ, कुछ विद्वानों की कल्पना अवश्य हो सकती है। कल्पना कोई कुछ भी कर सकता है, उसका कोई क्या कह सकता हैा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने तो ओम् को परमात्मा का मुख्य और निज नाम ही माना है जो वेद सम्मत है।

आचार्य सोमदेव जी

आर्य समाज केसरगंज अजमेर के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज केसरगंज अजमेर के त्रैमासिक चुनाव श्री मदनलाल आर्य उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर के चुनाव अधिकारी के सानिध्य में सम्पन्न हुए जिसमें सर्व सम्मति से श्री रासासिंह रावत को प्रधान पद के लिए चुना गया। प्रधान रासासिंह ने अपनी कार्यकारिणी एवं अन्तरंग सभासदों की घोषणा की जो इस प्रकार है –

उपप्रधान	श्री नवीन मिश्रा
मंत्री	श्री चाँदराम आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री भागचन्द्र गर्ग

आर्य समाज पुष्कर में 40 अतिथियों का भ्रमणार्थ आगमन

दिनांक 24/06/2018 को ऋषि उद्यान, अजमेर से योग साधना शिविर समापन के पश्चात् 40 शिवरार्थी बस द्वारा आर्य समाज पुष्कर पहुँचे जिन्हे नन्दकिशोर आर्य द्वारा इन अतिथियों को आर्य समाज पुष्कर की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती के 40 कैलेन्डर व ऋषि मिशन न्यास की ओर से अभय मुनि द्वारा लिखित 40 पुस्तकें, भजन की सीडी के 40 सेट, 40 सेट वैदिक स्टीकरों के एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र स्वागतस्वरूप भेंट किया गया।

आर्य समाज ने छात्र–छात्राओं को स्कूल किट वितरित किए

आर्य समाज जिलासभा कोटा ने सेवा कार्यों के तहत कैथून क्षेत्र के बाड़ी भीमपुरा स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को स्कूल किट वितरित किए। स्कूल बैग, कॉपी, पेन व पेंसिल आदि स्कूल किट पाकर छात्र–छात्राओं के चेहरे खिल उठे। वहां उपस्थित अभिभावकों ने भी प्रसन्नता व्यक्त की।

विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने वहां उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि गांव के इस विद्यालय से शिक्षा ग्रहण करें व अपने गांव के विकास में योगदान देकर अपने क्षेत्र को संपन्न बनाएं। उन्होनें अभिभावकों को कहा कि अधिक से अधिक बच्चों को जो शिक्षा से वंचित रह रहे हैं उन्हें शिक्षा से जोड़ने का प्रयास करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा में साप्ताहिक सत्संग हवन का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के राजापार्क आदर्श नगर स्थित भवन में दिनांक 1 जुलाई 2018 को साप्ताहिक सत्संग हवन का आयोजन किया गया इस हवन में सभा में रहे आर्य विद्यार्थियों व अतिथियों ने आहूति दी, जिसमें आर्यवीर दल गंगापुर सिटी के नगर संचालक सी. ए. अभिषेक बंसल जी ने एवं सभा में रह रहे आर्य विद्यार्थी अनिल जी व सुरेश जी ने सुन्दर भजनो की प्रस्तुति दी कार्यक्रम में कौशल जी, रणजीत जी, पवन जी, राकेश जी, हरीश जी केसव जी आदि उपस्थित थे।

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ।। गीता – 14/11।।
सत्त्वगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जा सकता है, जब शरीर के सारे द्वार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

The question is : what was the manner of their being upon the previously tenantless Earth? Our answer must be that we do not know.

अर्थात् इस उजाड़ पृथिवी पर प्राणी कैसे उत्पन्न हुए? इस प्रश्न का हम यही उत्तर देते हैं कि हम लोग नहीं जानते। -Evolution, Pg. 70 by Prof. Patrick Geddes वै. सम्पत्ति पृ.152द्ध

नवम्बर सन् 1922 के छमू ।हम नामक पत्र में श्रवदमे ठवूवद कहते हैं कि 'ब्रिटिश म्यूजियम (अजायबघर) का अध्यक्ष डॉ. ऐथ्रिज कहते हैं कि इस ब्रिटिश म्यूजियम में एक कण भी ऐसा नहीं है, जो यह सिद्ध कर सके कि जातियों (Species) में परिवर्तन हुआ है। विकास विषयक दस में नौ बातें व्यर्थ और निस्सार हैं। इनके परीक्षणों का आधार सत्यता और निरीक्षण पर बिलकुल अवलम्बित नहीं है। संसार भर में कोई भी सामान ऐसा नहीं है, जो विकास की सहायता करता हो। (वै. सम्पत्ति पृ.170)

प्रथम विश्वयुद्ध के समय 'क्रिश्चियन हेरल्ड' में यह समाचार छपा था कि ब्रिटिश साइंस सोसायटी का अधिवेशन मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) में हुआ। प्रोफेसर विलियम वेटसन इसके सभापति थे। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि 'डारविन का विकासवाद बिलकुल असत्य और विज्ञान के विरुद्ध है।' प्रो. प्रेट्रिकगेडिस कहते हैं कि For it must be admitted that the factors of the evolution of man partake largely of the nature of the may-be's which has no permanent position in Science. अर्थात् यह युद्ध इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य जैसा पहले था वैसा ही अब भी है।-Ideals of Science and Faith. (वै. सम्पत्ति पृ.212)

सर जे. डब्ल्यू डासन कहते हैं कि 'विज्ञान को बन्दर और मनुष्य के बीच की आकृति का कुछ भी पता नहीं है। मनुष्य की प्राचीनतम अस्थियाँ भी वर्तमान मनुष्य जैसी ही हैं। इनसे उस विकास का कुछ पता नहीं लगता, जो इस मनुष्य–शरीर के पहले हुआ था।' (वै. सम्पत्ति पृ.170)

सिडनी कॉलेट कहते हैं कि 'साइंस की स्पष्ट साक्षी है कि मनुष्य अवनत दशा से उन्नत दशा की ओर चलने के स्थान में उल्टा अवनति की ओर जा रहा है। मनुष्य की आरम्भिक दशा उत्तम थी।' (वै. सम्पत्ति पृ.171)

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री द्वारा लिखित ''वैदिक युग और आदि मानव'' पुस्तक पृ. 11 से उद्धृत–

Now a days unhappily Jelly fish produces nothing but Jelly fish. But had that gelatinous morsel been fated to live. say a million of centuries earlier it might have been the proginitor of the race from which Homer and Plato, Devid and paul, Shakespear and our eminent professor have in their order been evolved. (Conder's Natural Selection and Natural Theology)

If it could be shown that the thrush was hatched from the lizard. (Conder's same book)

फ्रैंच दार्शनिक Henri Bergson को Anti Darwin theory देने के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। फिर भी हमारे प्रबुद्धों को कुछ समझ नहीं आया। नेट पर अनेकों अन्य विदेशी वैज्ञानिकों को Neo Darwinism आदि डार्विन विरोधी थ्योरिज् की चर्चा करते सुधी पाठक देख सकते हैं। इधर भारतीय वैज्ञानिकों की चर्चा के प्रसंग में आर्य विद्वान् स्वामी विद्यानन्द सरस्वती द्वारा रचित ''सत्यार्थ भास्कर'' ग्रन्थ (पृ. 877) को उद्धृत करना यहाँ प्रासंगिक है–

वनस्पतिशास्त्र के अन्तराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान् डॉ. बीरबल साहनी से पूछा गया– ''आप कहते हैं कि आरम्भ में एक सेल के जीवित प्राणी थे, उनसे उन्नति करके बड़े–2 प्राणी बन गये। आप यह भी कहते हैं कि आरम्भ में बहुत थोड़ा ज्ञान था, धीरे–2 उन्नति होते हुए ज्ञान उस अवस्था को पहुंच गया, जिसको विज्ञान आज पहुंचा हुआ है।'' तब आप यह तो बताइये कि– "Wherefrom did life come in the very beginning and wherefrom did knowledge come in the very beginning?" अर्थात् ''प्रारम्भ में जीवन कहाँ से आया और प्रारम्भ में ज्ञान कहाँ से आया? क्योंकि जीवन शून्य से उत्पन्न हो गया, यह नहीं माना जा सकता।'' डॉ. साहनी ने उत्तर में कहा, ''इसके साथ हमारा कोई सम्बन्ध नहीं कि आरम्भ में जीवन या ज्ञान कहाँ से आया।'' हम इस बात को स्वीकार करके चलते हैं कि आरम्भ में कुछ जीवन भी था और कुछ ज्ञान भी था–

"With this we are not concerned as to where from life came in the very beginning or wherefrom knowledge came in the very beginning. We are to take it for granted that there was some life in the beginning of the world and there was knowledge also in the

इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88 ।।

अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

beginning of the world and by slow progress it increased."

इससे भी विकासवाद की दुर्बलता प्रकट हो जाती है।

अन्त में मैं भारत ही नहीं, अपितु विश्व भर के प्रबुद्ध मानवों व वैज्ञानिकों से निवेदन करना चाहूंगा कि वे अपने इतिहास पर गर्व करना सीखें। आप सभी यह तो मानते व जानते ही हैं कि वेद संसार में सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। हम यह भी सिद्ध करने की क्षमता रखते हैं कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा वेद मंत्ररूपी ध्वनि तरंगों से ही सृष्टि की उत्पत्ति हुई है अर्थात् जिन ध्वनि तरंगों से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई, वे ध्वनियां वेद मंत्र ही थे एवं वर्तमान में वे ही तरंगें सर्वत्र विद्यमान हैं। यह मेरी Vaidic Rashmi theory of Univerce है, जो इस ब्रह्माण्ड को वर्तमान भौतिकी की अपेक्षा बहुत आगे तक समझा सकती है। इस थ्योरी के प्रकाशित होने से पूर्व मैं इस पर कुछ लिख नहीं सकता। मैंने ऋग्वेद के मंत्रों द्वारा भी मनुष्य की उत्पत्ति की चर्चा इस लेख में की है। वेद तथा ऋषियों के मत में मनुष्य की प्रथम पीढ़ी सर्वाधिक बुद्धिमती, शारीरिक व मानसिक बल तथा सत्वगुण सम्पन्न थी। उसके पश्चात् उनमें न्यूनता ही आयी, न कि विकास हुआ। हम संसार भर के सभी मानव उन्हीं महान् पूर्वजों के वंशज हैं। वेद हम सबका है, ऋषि हम सबके पूर्वज हैं। वेद व ऋषियों के ग्रन्थों पर मानवमात्र ही नहीं, अपितु ब्रह्माण्ड के सभी बुद्धिमान् प्राणियों का साझा अधिकार है। आयें, हम सभी इस साझी विरासत को अपनायें, अध्ययन व अनुसंधान करें और गर्व से स्वयं को पृथिवी के सबसे बुद्धिमान् मनुष्यों का वंशज कहें। मैंने केवल जैव विकासवाद पर ही चर्चा की है, ज्ञान व भाषा के कथित क्रमिक विकास की समालोचना पृथक् लेख वा पुस्तक में की जा सकती है। जैव विकासवाद पर भी संक्षिप्त चर्चा की है अन्यथा यह लेख एक पुस्तिका का रूप ले लेता। विज्ञ पाठक ज्ञान व भाषा के विकास के साथ–2 सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में अद्भुत विज्ञान को समझने हेतु ''वेदविज्ञान आलोकः'' नामक मेरे विशाल ग्रन्थ, जो कुल 2800 पृष्ठों का चार भाग में छप रहा है, की प्रतीक्षा करें। हां, चलते–2 एक बात यह भी लिखना उचित समझता हूँ कि यदि कोई प्रबुद्ध यह कहे कि जब सूक्ष्म रश्मियां विकास यात्रा करते हुए नाना कण, फोटोन एवं नाना लोकों को उत्पन्न कर सकती हैं अथवा उनके रूप में प्रकट हो सकती हैं, तब अमीबा से मनुष्य शरीर तक के विकास को क्यों मिथ्या बताया जाता है? इस विषय में हमारा निवेदन है कि जड़ जगत् के निर्माण व विकास में रश्मियां कण वा फोटोन प्रायः अपने स्वरूप को भी बनाये रखते हैं, परन्तु कोई विकासवादी यह नहीं मानेगा कि विभिन्न प्राणियों के शरीरों में अमीबा अपने स्वरूप में अवस्थित रहता है। इस कारण यह तुलना करना उचित नहीं है।

मेरे मित्रो! जरा विचारें कि जो व्यक्ति वा समाज स्वयं को पशुओं का वंशज कहे, उसमें आत्म–स्वाभिमान कहाँ रहेगा? इस विषय में लखनऊ विश्वविद्यालय में दिए एक व्याख्यान में नासा के वैज्ञानिक और भारतीय प्रधानमंत्री के पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. ओ.पी. पाण्डेय ने डार्विन के विकासवाद को खारिज करते हुए उचित ही कहा है कि 'देश भर के बच्चों को गलत सिद्धान्त पढ़ाया जा रहा है, जिससे उन पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।' (नवभारत टाइम्स –2 फरवरी 2018) आइये, इस दीन–हीनता के गर्त से निकालकर मैं आपको सर्वोच्च शिखर पर ले जाना चाहता हूँ। आयें, हम सब एक ईश्वर के पुत्र–पुत्री हैं एवं यह पृथिवी ही हमारी आद्य जन्मदात्री मां है, इस कारण यह सम्पूर्ण विश्व एक ही परिवार है। इस परिवार को सुख, शक्ति व आनन्द की ओर ले जाने का हम सब मानवों का दायित्व है। हमें विज्ञान को खुले व उदार मस्तिष्क से ही पढ़ने का प्रयास करना चाहिए। हमें पूर्वाग्रहों से बचकर सत्य–असत्य का विवेक करने हेतु सतत प्रयत्न करते रहना चाहिए।

(लेखक – आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक)

महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास भिनाय कोठि में वैलनेस सेंटर का शुभारम्भ

महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास में बुधवार सुबह योग की कक्षाओं का शुभारम्भ करते हुए वैदिक विद्वान पंडित रामस्वरूप ने कहा कि हमें बुरे कर्मों से खुद को बचाते हुए स्वस्थ्य जीवन यापन करना चाहिए। कार्यकारी प्रधान डॉ. श्री गोपाल बाहेती ने बताया कि योग प्रशिक्षक श्री हेमन्त आर्य प्रशिक्षण देंगे। न्यास के मंत्री श्री सोमरतन आर्य के अनुसार ये कक्षायें प्रतिदिन सुबह 7 से 8 बजे तक न्यास भवन के हॉल में निशुल्क होंगी। इसी प्रकार न्यास भवन में प्रतिदिन शाम 6 से 7 बजे तक निशुल्क एक्युप्रेशर विशेषज्ञ डॉ. राजेन्द्र शर्मा सेवाएं दे रहे हैं।

आर्य समाज डोहरिया का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज डोहरिया का वार्षिक उत्सव 17 से 19 मई 2018 तक मनाया गया। इस अवसर पर पर्यावरण शुद्धि हेतु चतुर्वेद शतकम् यज्ञ किया गया। वेद प्रचार कार्य के दौरान अंधविश्वास एवं कुरीति निवारण पर उपदेश हुए। प्रथम दिन युवा सम्मेलन किया गया, जिस योग के आठ अंग बताये गये, दूसरे दिन महिला सम्मेलन में धर्म के दस लक्षण बताये गये. तीसरे दिन वरिष्ठ नागरिक सम्मेलन किया गया, जिस में वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम में आने पर व्यक्ति को अहंकार, अधिकार, अंधकार तथा अंगीकार शून्य हो जाना चाहिये। इस कार्य के दौरान दिनांक 19/5/18 को दोपहर बाद आर्य उप प्रतिनिधि सभा भीलवाड़ा की बैठक की गई। इसके बाद स्नेह भोज का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य समाज देवरिया, पनोतिया, कादेड़ा, चापानेरी एवं शाहपुरा के आर्यजन शामिल हुए।

जयपुर संभाग का आर्य वीरांगना कन्या चरित्र निर्माण एवं प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य समाज सांभर व जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज परिसर में आर्य कन्या चरित्र निर्माण एवं प्रशिक्षण शिविर का समापन आर्य वीरांगना दल की प्रधान शिक्षिका अभिलाषा आर्य एवं आशु आर्य के नेतृत्व में 150 आर्यवीरांगनाओं ने भाग लेकर गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसमें आर्यवीरांगनाओं को आसन, योग, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्यनमस्कार, भूमि नमस्कार, लाठी, तलवार, भाला, चाकू एवं जूडो– कराटे आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

इस शिविर की अध्यक्षता ऋषि उधान अजमेर के स्वामी सोमानन्द सरस्वती जी द्वारा की गई। समापन समारोह में मुख्य अतिथि विधायक श्री निर्मल कुमावत, विशिष्ट अतिथि नगर पालिका अध्यक्ष श्री विनोद कुमार सांभरिया, सांभर लेख के प्रधान श्री गिरधन गोपाल कयाल, महामंत्री श्री अतुल अग्रवाल, आर्यवीर दल राजस्थान के कार्यकारी संचालक श्री देवेन्द्र शास्त्री तथा आर्यवीर दल जयपुर के संचालक श्री दीपक शास्त्री व अन्य सदस्य उपस्थित थे।

जयसिंह पुरा, जिला झुन्झुनु में चरित्र एवं संस्कार निर्माण शिविर का समापन

जयसिंह पुरा, जिला झुन्झुनु में चरित्र एवं संस्कार निर्माण शिविर का समापन हुआ यह सात दिवसीय शिविर आर्यवीर दल झुन्झुनु के जिला संचालक पहलवान वीरेन्द्र शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। जिसमें व्यायाम शिक्षक दिनेश आर्य चित्तौड़गढ़ व हेमराज गंगापुर सिटी द्वारा आर्यवीरों को प्रशिक्षण दिया गया। समारोह की कुछ झलकियाँ

- **परमात्मा की बनायी हुई इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता ।**

– सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 232 / 2017-2019 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- समस्त आर्य समाज अपने भवन पर ओ३म् ध्वाज अनिवार्य रूप से फहरायें एवं मुख्य प्रवेश द्वार एवं भवनों के द्वार पर ''आर्य समाज/आर्य समाज मन्दिर'' इस प्रकार अवश्य अंकित करवायें। यथा समय आर्य समाज भवन, मुख्य द्वार, परिसर की बाउण्ड्री वॉल की मरम्मत, कलर पेन्ट आदि करवायें। आर्य समाज की सम्पत्तियों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों का है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कभी भी आर्य समाज का निरीक्षण किया जा सकता है। कृपया अवगत रहें।
- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का मुखपत्र ''आर्य मार्तण्ड'' का प्रत्येक अंक नवम्बर–द्वितीय अंक से पीडीएफ फॉरमेट में भी उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस फॉर्मेट में प्राप्त करने के लिए अपना ईमेल पता, नाम एवं सम्पर्क सूत्र aryamartand@gmail.com पर भेजें। वाट्स एप्प पर ''सत्यार्थ प्रकाश क्रान्ति, आर्य वीर राज. सूचना, आर्य वीर दल के अन्य सभी ग्रुप्स में नियमित रूप से उपलब्ध करवाया जा रहा है ।
- आर्य समाजों में होने वाली समस्त गतिविधियाँ ऋषि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही संचालित की जावें। उक्त प्रयोजनार्थ ही आर्य समाज संस्थाएँ अपने परिसर एवं भवन अन्य सम्बन्धित संस्थाओं को नियमानुसार उपलब्ध करवा सकती हैं। महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल उद्देश्यों वाली संस्थाओं एवं संगठनों आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एतदर्थ स्वीकृति नहीं है। साथ ही समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को यह भी निर्देशित किया जाता है कि वे आर्य समाज के भवन अथवा परिसर को व्यवसाय की दृष्टि से किराये पर देने से पूर्व सभा से लिखित में स्वीकृति अनिवार्यतः प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में यह भी संसूचनीय है कि आर्य समाज के पदाधिकारियों को समाज के भवन, दुकान, जमीन अथवा किसी भी प्रकार की परिसम्पत्तियों को विक्रय करने का अधिकार नहीं है।

आतिथ्य –आहुति

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा जयपुर में कार्यालय परिसर में निरन्तर आने वाले अतिथियों के लिए अस्थायी आवास एवं भोजन हेतु संचालित आतिथ्य–यज्ञ में अपनी बहुमूल्य आहुति देकर इस पवित्र यज्ञ को सुचारू रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे सभी आहुतिदाताओं का बहुत–बहुत आभार ।

अन्य जो भी इस व्यवस्था के सफल संचालन में अपनी आहुति भेंट करने के इच्छुक हों वे 9352547258 पर सम्पर्क कर सकते हैं। जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, स्मृति, विवाह आदि अवसरों पर आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस अतिथि यज्ञ में अपनी आहुति अर्पित पुण्यभागी बनें।

आगामी कार्यक्रम

1. 21वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव उदयपुर (नवलखा महल, गुलाबबाग) में दिनांक 6 से 8 अक्टूवर 2018 तक।
2. 28 वाँ आर्य महासम्मेलन अटलांटा (अमेरिका) 19 से 22 जुलाई 2018
3. आर्य समाज गंगापुर सिटी द्वारा श्रावणी पर्व पर अथर्ववेद परायण यज्ञ दिनांक 6 से 12 अगस्त 2018
4. इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2018 दिल्ली 25–26–27–28 अक्तूबर, 2018

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषकः–
सम्पादक, आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर–302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर
IFSC - UCBA 0001883

प्रेषित

विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।